

● १- जेता-विजेतार अंतर्गत छुप्पते विजेतार सुनिश्च आकर्ष  
चम्पूके लिङ्ग। ५

उत्तरः- बहुमात्र वानिक्य दृष्टि विजेतार सुनिश्च अस्ति अस्मद्भू  
भूलि विवरिति दैत्ये। विजेतार नष्ट नष्ट एवीज्ञान-तिवीक्षण गतात  
न-न पश्यते आविर्भूते आव-पूर्वा पश्यते न-आपातन अस्तु दैत्ये।  
देवते अंतर्गत वास्तव-जेतार-अच्छते अच्छते वास्तवाते दग्धित्  
पश्यत विविद्ये विजेतारे। जेतारिक तातोद्दाते विजेतारे  
आनन्दस्व इति आकर्षन वास्तव न गते गत आव-सिद्धान्तवा-  
प्राचारित वास्ते। जेता-विजेतार आद्य छुप्पते कार्ये अनि  
विजेतारे छुप्पते वास्ते-प्रद्यानस्व देत्ये। न-न पश्यत पश्यत  
आव-आव शुन-प्रविजा प्राचार वास्ते विजेतारे आनन्दस्व वाचि आव-  
कीर्तन विवेन्द्रे गते उप्ते वास्ते शुल। गते विजेतारे अच्छते  
जेतारे उप्ते आनन्दस्व आवश्यी विचारे आव-विजेतारे उप्ते जेतार  
मने विचारे वाचि गते वाचि विविद्ये वाचि विजेतारे उप्ते जेतार  
पास्ते। शुनते विजेतारे जेता-विजेतार आद्य अंतर्गत छुप्पते  
छुप्पते वास्ते वास्ते पश्यत आवश्यी चाहिद्य इति आव चाहिद्य वृद्धित  
विजेतारे अवश्य वास्ते वास्ते। अर्थात् विजेतारे वानिक्यवा-  
पश्यत प्रश्नोद्देन, मिश्चयन्ते अप्त अद्यत वास्ते वास्ते विजेता-  
विजेता छुप्पते आकर्षन वास्ते वास्ते।

—X—